International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 2, February 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

वाल्मी क रामायण में शै क्षक मूल्य

डॉ. महेश चंद शर्मा

प्राचार्य एवं वभागाध्यक्ष

श्री बीरबल मैमोरियल शक्षक प्र शक्षण महा वद्यालय

बानसूर अलवर राजस्थान

वाल्मी क रामायण भारत का राष्ट्रीय आदि काव्य है । धा र्मक एवं नैतिक आदर्शो का भंडार होने के साथ-साथ वह एक महत्वपूर्ण मानवीय समाजशास्त्र भी है , समाज में जो जीवन मूल्य स्था पत हुए है , वे एक पुरातन युग की जी वत परम्पराओ , धारणाओं , चंताओ , आकांशाओ और भावनाओ का चत्रण करने के कारण वह प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति की एक बहुमूल्य नि ध है । वे सभी वाल्मी क रामायण की ही देंन है । उसकी उपमा एक ऐसे पर्वत से दी जा सकती है , जिसकी चोटी से हम प्राचीन आर्यो के सामाजिक,आ र्थक,राजनितिक,धा र्मक एवं कला-संबंधी क्रया कलाप का सम्यक दर्शन कर सकते है । तत्कालीन भारतीय समाज के अनेक अस्पष्ट पक्षों पर वाल्मी क के काव्य से जैसा प्रकाश पड़ता है , वैसा अन्य कसी श्रोत से नही । वाल्मी क हमारे राष्ट्रीय आदर्शो के आदि - वधाता है । धर्म और सत्यरूपी महावृक्षों के जो अमर बीज उन्होंने बोये , वे आज भी फल फूल रहे है ।

जनसाधारण में प्रच लत आचार व्यवहार ही कसी समाज की संस्कृति का परिचायक होता है । रामायण कालीन समाज को भी इस कसोटी पर परखना आवश्यक है । नैतिक नियमो और धर्मानुकुल शासन द्वारा संचा लत उस युग की सामाजिक व्यवस्था में आचार- वचार का अत्य धक महत्व था । दैनिक जीवन में व्यवहार की सरलता और नम्रता का वशेष ध्यान रखा जाता था । रामायण-काल सभ्यता , शष्टता , मधुर संवाद , वनम्र व्यवहार

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

और उच्च शष्टाचार का युग था सुसंस्कृत व्यक्ति के ये ही मानदंड थे । रामायण कालीन शष्टाचार सदा से भारतीय शष्टाचार का आदर्श रहा है । मानवीय मूल्यों के आधार पर यंहा गुरु- शष्य शष्टाचार अति थ-सत्कार व ऋ ष - मुनियों के सत्कार को सर्वोपरि स्थान दिया जाता था । धर्म के ज्ञाताओ को अति थ का सत्कार अवश्य करना चाहिए , चाहे वह प्राकृत (साधारण) व्यक्ति ही क्यों न हो वनवासी ऋ ष - मुनियों के लए भी अति थ सत्कार एक ऐसा कर्तव्य था , जिसकी उपेक्षा नही की सकती थी । अगस्त्य ने राम से कहा था क जो तपस्वी अ थति का स्वागत नही करता उसे परलोक में झूठे गवाह की भांति अपने ही शरीर का मांस खाना पड़ता है । अ थति - सत्कारको एक यज्ञ की कोटि तक चढा दिया गया था , वह उन महायज्ञो में से था जिनका प्रत्येक गृहस्थ को पालन करना चाहिए ।

अ थतिः कल पूजाहोZ प्राकृतो· प वजानता ।

धर्म जिज्ञासमानेन .....॥ (वा.रा.५।१।१२)

दुःसाक्षीव परे लोके स्वानि मांसानि भक्षयेत ॥ (वा.रा.३।१२।१९)

वनवासी मुनिगण अपने वानप्रस्थ धर्म के अनुसार आतिथ्य करते थे । राम , लक्ष्मण और सीता के आगमन पर दण्डकरण्य के तपस्वियों ने आगे बढ़कर उनका स्वागत कया (अ भजग्मुः - 3/1/11) और बड़ी प्रसनता के साथ मंगल-सूचक आ शर्वाद देते हुए जल फल मूल और फूल अ र्पत करके पर्णशाला में ले जाकर उन्हें ठहराया । स द्ध-प्राप्त ऋ ष-मुनि कसी राजकीय अति थ का सत्कार करने में अपने समस्त साधनों का प्रयोग करते थे , क्यों क उनकी द्रष्टि में राजा अति थयों में श्रेष्ठ होता था , जिसका यत्नपूर्वक स्वागत करना चाहिए-

राजंस्त्वमति थश्रेष्ठः पूजनीयः समन्ततः l (वा.रा.१।२१।४)

नैतिक शक्षा की कसी भी प्रकार उपेक्षा नही की जाती थी । चरित्र-बल ,सत्य और कर्तव्य के प्रति निष्ठा , शरीर और मन की स्वच्छता तथा इन्द्रियो पर संयम ही सु श क्षत व्यक्ति की सच्ची पहचान मानेजाते थे । राम के प्रस्ता वत योवराज्या भषेक की घडी में महाराज दशरथ ने उन्हें जिन शब्दों में से संबो धत कया , वे नैतिक शक्षा के तत्कालीन आदर्श को भली-भांति अ भव्यक्त करते है । उन्होंने कहा- “ बेटा , मेरा पुत्र होकर भी तुम गुणों में मुझसे बढ़-चढ़े हो ,इस लए मुझे वशेष प्रयो हो । तुमने अपने गुणों से समस्त प्रजा को प्रसन्न कर लया है यद्ध प तुम स्वाभाव से ही गुणवान हो , तथा प स्नेहवश मै तुम्हे कुछ हित की बाते कहना

चाहता हूँ । तुम का और क्रोध से उत्पन होने वाले व्यसनों का त्याग कर दो । गुप्तचरों द्वारा पता लगाकर तथा स्वयं जाचंपड़ताल कर मंत्री ,सेनापति आदि अ धकारियों तथा समस्त प्रजा को प्रसन्न रखो । जो राजा भण्डार -घरो तथा शस्त्रगारो के द्वारा उपयोगी वस्तुओ का वशाल संग्रह करके प्रजा का अनुरन्जन एवं पृथ्वी का पालन करता है । उसके मत्र वैसे ही आनन्दित रहते है ,जैसे अमृत को पाकर देवता प्रसन्न हुए थे । इस लए पुत्र ,अपने चत्त को वश में रखकर इस प्रकार के उत्तम आचरणों का पालन करो ।'' (वा.रा.२/३/४०-४६)

वाल्मी क ने राम को एक आदर्श महापुरुष के रूप में चत्रित कया है उनमे वे सभी सद्‌गुण थे ,जो मानव में कल्पित कये जा सकते है । उन्हें जो सर्वागीण शक्षा मली ,उससे वह । लो कक जीवन के व भन्न क्षेत्रो में खूब चमके । उनकी परिष्कृत रू च और कला प्रयता , उदारता और सहानुभूति ,मानवता और सह्रदयता के कारण उनका जीवन एकांगी रहा और उन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा द्वारा समकालीन जगत को बड़ा प्रभा वत कया । सदाचार और नैतिकता की दृष्टि से तो वह अपने युग से कोसो आगे थे । इस काल में सुसंचा लत शक्षा-संस्थाएँ भी थी । तत्कालीन आश्रम वधा के स्थायी केंद्र थे । वस्तुतः सारा देश ही आश्रमों से भरा-पूरा था , उनमे ज्ञान- वज्ञान की अजस्र धारा बहती थी । सु वख्यात आश्रमों में वधार्थी पता-पुत्र की परम्परा से बराबर आते रहते थे । उसमे अनेक परिवारों की कई पीढियाँ शक्षा पा चुकी थी । आश्रमों के मुनि- शक्षक अपनी पत्नियों (मुनिपत्नय:) और संतान(मुनिदारका:)के साथ निवास करते थे ।

अंधमुनि अपने आश्रम में वानप्रस्थ-धर्मानुसार सपत्नीक एकान्त जीवन व्यतीत करते थे और उनका पुत्र भी वही वेदाध्ययन में निरत रहता था | रात्रि के चौथे पहर में वह शास्त्रों का स्वाध्याय एवम् मधुर घोष कया करता था ।

तस्यायमाश्रम: पुन्यस्तयेमें मुनयःपूरा ।

शष्या धर्मपरा वीर तेषा पापं न वधते॥ (वा.रा.१/२३/५)

कस्य वा पररात्रेडहं श्रोष्या म ह्रदयंगमम् ।

अधीयानस्य'मधुरशास्त्रं वान्य द्वशेषतः॥ (वा.रा २/६४/३२)

वनवास काल में राम ,लक्ष्मण और सीता अनेक आश्रम - वध्यालयों में गये थे । गंगा - यमुना संगम पर स्थित भरद्वाज - आश्रम में वे सूर्यास्त के समय पहुंचे थे । उस समय ऋ षवर अग्निहोत्र करके से शष्यों धीरे हुए आसन पर वराजमान थे । आश्रम के उपवनो में से यमुना

नदी बहती थी ,जिसके दोनों ओर सफेद चुने से पुते अनेक रमणीय आवास (आवसथ) बने हुए थे ।

आसमुभयतः कूलं पांडुमृत्तिकलेपनाः ।

राम्याश्चावसथादिव्या ब्राह्मणस्य प्रसादजाः॥ (वा.रा २/५१/४२)

इन आश्रमों में सांयकाल का समय प्रायः कथा - वार्ता में व्यतीत होता था (चत्राः कथयतः कथाः) (वा.रा 2/14/34) ऋ ष वाल्मी क की आश्रम-शाला में भी कई शष्य वास करते थे , जिसमे से एक का नाम भारद्वाज था । वाल्मी क का आश्रम वशेषतः साहित्य और ल लत कलाओ का केंद्र रहा होगा , जैसा क लव-कुश की शक्षा-दीक्षा से वदित होता है राम के ये दोनों पुत्र "आश्रमवा सनो" थे , उन्हें वाल्मी क ने वेदों के अतिरिक्त संगीत और अ भनय-कला में भी पारंगत बनाया था । समस्त रामायण-काव्य को कंठस्थ करके वीणा की मधुर लय के साथ गाना भी उन्हें सखाया गया था । अपने गायन के बदले कसी प्रकार का पारितो षक न लेने की शक्षा देकर वाल्मी क ने उनके सामने कला को बिक्री की वस्तु न बनाने का आदर्श रखा था ।

लोभश्चापी न कर्तव्यः स्वल्पोड प धनवाŒN;k1

कीं धनेनाश्रमस्थानां फलमूला शन तदा॥ (वा.रा.७/९३/१२)

आश्रमों के गुरुजन तथा छात्रगण , सदैव एक ही स्थान में रहकर ' कूप-मण्डुक ' नही बने रहते थे , अ पतु समय-समय पर शास्त्रीय एवं व्यावहारिक ज्ञान की अभीवृ द्ध के लए ,शैक्ष णक यात्राओ पर भी जाया करते थे । सद्धाश्रम के मुनि और शष्य , को शक कुलपति तथा कोसल-राजकुमार राम और लक्ष्मण के साथ जनक के यज्ञ-महोत्सव को देखने के लए सदलबल गये थे । इसी प्रकार उत्तरकांड में वाल्मी क भी अपने शष्यों साहित राम के अश्वमेघ-यज्ञ में उपस्थित हुए थे जंहा लव-कुश ने अपनी रामायण शक्षा का प्रदर्शन कर ख्याति अर्जित की । ऐसे अवसरों पर देश- वदेशो से आये सभी प्रकार के लोगो का संपर्क तथा बहुश्रुत वद्धानो की अलोचनाए छात्रों के लए मार्ग-दर्शक सद्ध होती थी । इन आश्रम- वधालयो के निवासी , नानाप्रकार की धा र्मक प्र क्रयाओ में व्यस्त रहने पर भी सामयिक घटनाओ से अपना संपर्क बनाये रखते थे । राम को अपने दीर्घ वनवास-काल में जिन आपत्तियों का सामना करना पड़ा था , उन सबकी जानकारी ऋ ष भरद्धाज को अपने भ्रमणशील (प्रवृंत) छात्रो से मल चुकी थी , ये छात्र राजधानी का भी अक्षर दौरा कर लया करते थे । राम ने वनवास से लोटकर भारद्धाज मुनि से अयोध्या का हाल चाल पुछा था ।

सर्वमेत द्वदितं तपसा धर्मवत्सल ।

सम्पतन्ति च में शष्याः प्रवृन्ताख्याः पूरि मतः॥ (वा.रा.६/१२४/१६)

सोडप्रच्छद भवाधैनं भरद्वाजं तपोधनम्।

श्रृणों ष कच्चिद भगवन्सु भक्षानामयं पूरे ॥

कच्चित्स युक्तो भरतो जीवन्त्यपी च मातर:॥ (वा.रा.६/१२४/०२)

शक्षा -समाप्ति के पश्चात ,स्नातक को चाहिए क वह अपने कार्य-कलाप को अपने ही स्वार्थो तक सी मत न रखे ,अ पतु समाज कल्याण में भी यथाशक्ति योग दे । राम अपने युग के सर्वोतम शक्षा-प्राप्त राजकुमार थे । कन्तु इस कारण उनके और उनके सामान्य अनुयायियो के बीच कोई खाई पैदा नही हो गई । उनमे कोई उच्चता का अ भमान या अन्य लोगो को हीन समझने की प्रवृति नहीं थी । उनकी शक्षा का नैस र्गक प्रभाव उनके सम्पर्क में आनेवाले सभी व्यक्तियों पर पड़ता था । वधाध्ययन और ववाह के पश्चात राम जंहा अपने माता - पता की आज्ञाओ का नियमपूर्वक पालन करते थे ,वहा 'पोर -कार्यो ' (नगर -व्यवस्था आदि) का भी संचालन करने और प्रजाजनों के सुख - दुःख में हाथ बंटाते थे । पारिवारिक अनुशासन और राजकीय उत्तरदायित्व के इस दोहरे नियन्त्रण की बदोलत उनके उदीयमान व्यक्तित्व को बहुमुखी वकास का अवसर मला ।

पतुराज्ञं पुरस्कृत्य पौरकार्या ण सर्वशः ।

चकार रामः सर्वा ण प्रया ण च हितानि च ॥

इत्त्द्ध'भ्यो इत्त्द्धकार्या ण कृत्वा परयन्त्रितः ९

गुरुणांः गुरुकार्या ण काले कलेडन्वावैक्षत ॥ (वा.रा.१/७७/२१२२)

व्यसनेषु मनुष्याणां भृशं भवति दुः खतः ।

उत्सवेषु च सर्वेषु पतेव परितुष्यति ॥ (वा.रा.२/२/४०)

स्नातक को सामाजिक कर्तव्यों का पालन करने के लए तत्कालीन भक्षा - शस्त्रियो ने ''ऋणनि त्रीणी'' के सद्धांत का प्रतिपादन कया है । इसके अनुसार

संसार में उत्पन्न होने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर देव -ऋण और पतृ - ऋण इन तीन ऋणों का भार आ पड़ता है । यज्ञो के अनुष्ठान ,शास्त्रों के स्वाध्याय तथा सन्तानोत्पादन द्वारा मनुष्य इन ऋणों से मुक्त हो सकता है । स्नातक में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करने के लए यह सद्धांत बड़ा उपादेय है । यदि इस रामायणकालीन शक्षा की तुलना पांचवी शताब्दी ई.पू.के ए एंथेस (यूनान) में प्रच लत शक्षा-व्यवस्था से करे तो खुद समानताओ के अतिरिक्त आदर्शो में कई e© लक भेद भी दोनों में द्रष्टिगोचर होंगे । यूनानी शक्षा प्रणाली में शास्त्रीय या धा र्मक ज्ञान के लए व्यवस्था नही थी । भारतीय शक्षा में महत्व आत्म सयंम द्वारा प्राप्त होने वाली धीरता एवं गंभीरता को दिया जाता है । और उसके अनुसार मानव जीवन का लक्ष्य पूर्वा ftZr कर्मो का क्षय है इन सद्धांतो का प्राचीन यूनानी शक्षा-व्यवस्था में स्थान नही था l रामायण-युग की शक्षा में एक तारतम्य इसके अतिरिक्त था - आदर्शो का सम्मान और संतु लत वभाजन था l वद्या र्थ के व्यतीतत्व का सर्वागीण वकास करना , उसके शारीरिक और मान सक , बो द्धक और आध्यात्मिक ,धा र्मक और व्यहारिक, व्यतिगत और सामाजिक जीवन को समुन्नत करना उसका मूलभूत आदर्श था l उस समय के आदर्श राजा , सुसंस्कृत प्रजा ,कर्तव्यनिष्ठ अ धकारीगण और संघर्ष-रहित समाज , इसी सांस्कृतिक शक्षा की देंन थे l